वार्षिक 150/- रुपये | जुलाई 2024 | वर्ष 26 | अंक 09 | पृष्ठ - 28 | मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

पशुपतिनाथ जी

नई एनडीए सरकार का परम कर्तव्य

गोवंश-हत्या पर त्वरित पूर्ण प्रतिबंध लगाए

सम्पादकीय

नई एनडीए सरकार का परम कर्तव्य
गोवंश-हत्या पर त्वरित पूर्ण प्रतिबंध लगाए

आध्यात्मिक–अहिंसक राष्ट्र भारत में आदिकाल से ही गोवंश आधारित जीवन पद्धति विद्यमान रही रही है। निर्विवादरूप से यह भी कहा–माना जाता है कि इस देश में ***"गोसंस्कृति"*** के अनुरूप ही देशवासी जीवन–यापन करते थे। आज "गोसंस्कृति" के संशोधित स्वरूप को ही सनातन संस्कृति या भारतीय संस्कृति कहा जाने लगा है। इस परिप्रेक्ष्य में उस समय से ही "गोसेवा–रक्षा–संवर्द्धन" भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। इस आधार पर ही कहा जाता है कि हमारे देश में दूध–दही की नदियां बहती थीं। इसीलिए प्रारंभ से ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ गोवंश को माना गया है। गोवंश आधारित खेती और लघु–कुटीर उद्योग–धंधों के आधार पर प्रायः सभी गांवों में ग्रामवासी सुख–शांति–समृद्धि के साथ जीवन–यापन करते रहे हैं।

स्पष्ट है गोधन (गोवंश) को सबसे बड़ी सम्पदा माना जाता था। गोवंश संख्या बल पर ही ग्रामवासियों का मान–सम्मान होता था, उनको विभिन्न उपाधियों से विभूषित किया जाता था, जिसे सभी लोग भलीभांति जानते हैं। वास्तव में धार्मिक–अध्यात्मिक दृष्टि से, आर्थिक पहलू से, पर्यावरण संतुलन में, मानव स्वास्थ्य संरक्षण में और सामाजिक समरसता बनाए रखने में गोवंश का अप्रतिम योगदान रहा है। इसीलिए मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत तक किये जाने वाले सभी सोलह संस्कारों में गोमाता–गोवंश अभिन्नरूप से जुड़ा हुआ था और अभी भी जुड़ा हुआ है। अन्य सभी प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान भी गोमाता (पंचगव्य) के बिना संपन्न नहीं हो सकते। इसी कारण गोमाता–गोवंश की हत्या को अक्षम्य अपराध माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार तो गोवंश–हत्या को महापाप घोषित किया गया है। यहां तक कि मानव–हत्या से भी बड़ा अपराध मान कर उसके प्रायश्चित का विधान भी स्पष्ट रूप से बतलाया गया है।

सच तो यह है कि सम्पूर्ण मानवजाति के भरण–पोषण और मंगलकारी कल्याण में सर्वाधिक उपादेयता है गोवंश की। इसलिए जब तक इस पवित्र–पावन भारत भूमि पर गोमाता के रक्त की एक बूंद भी गिरती रहेगी तब तक इस देश में सुख–शांति कदापि संभव नहीं। स्मरण रहे, गोमाता बिना किसी भेदभाव के सभी धर्मों, पंथों, सम्प्रदायों के लोगों को अपने अमृतरूपी दूध (संपूर्ण पौष्टिक भोजन) का पान कराकर अपने ही गोबर–गोमूत्र से आरोग्यता–सम्पन्नता भी प्रदान करती है। इन सब उपकारों के बाद भी यदि कोई मनुष्य गोवंश–हत्या और गोमांस भक्षण का समर्थन करता है तो असंदिग्ध रूप से वह गोद्रोही और देशद्रोही है (गोभक्तों के कथनानुसार)।

यथार्थ यह है कि मानव के पास पाई जाने वाली सम्पदाओं में बलिष्ठता, आरोग्यता, सुसम्पन्नता, बुद्धिमत्ता आदि की जानकारी प्रायः सभी को है, लेकिन इनके मूल आधार से अधिकांश लोग अनभिज्ञ हैं। वस्तुतः इन सभी सम्पदाओं का मूल आधार है गोसम्पदा (गोवंश–पंचगव्य), जो सर्वश्रेष्ठ–सर्वोपरि है। दुर्भाग्य से या कहें अज्ञानतावश ऐसे दिव्य गोवंश की हत्या करने के साथ ही उसकी घोर उपेक्षा की जा रही है। दुष्परिणामस्वरूप आज सम्पूर्ण मानव समाज विकराल समस्याओं के मकड़जाल में फंसकर और असाध्य रोगों से ग्रसित होकर अतिशय कष्टदायी जीवन जी रहा है। अतः ऐसी विषम परिस्थिति में ***भारत को विकसित राष्ट्र बनाने और मानव स्वास्थ्य को बचाने के लिए गोवंश आधारित जीवनशैली अपनाना अपरिहार्य है,*** अन्य कोई विकल्प नहीं। इसी दृष्टिकोण से केंद्र सरकार एवं अनेक राज्य सरकारों द्वारा भी गोवंश पालन–संवर्द्धन के लिए अनेक योजनाएं प्रारंभ की गई हैं, जिनके माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ नींव रखी जा सकती है और सुदृढ़ ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आधार पर ही देश में चहुंओर सुख–शांति–समृद्धि परिलक्षित हो सकती है। अतः ऐसे परम कल्याणकारी गोवंश को बचाने के लिए नई एनडीए सरकार का परम कर्तव्य है कि वह गोवंश–हत्या को रोकने के लिए त्वरित राष्ट्रीय कानून बनाये। साथ ही गोवंश पालन–संवर्द्धन और संरक्षण के लिए सभी प्रकार का आर्थिक सहयोग प्रदान करे।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 26 अंक-09 जुलाई - 2024 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
दिनेश उपाध्याय जी
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक :
देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : जय प्रकाश गर्ग जी
मो. : 9654414174

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 15/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
लोक कल्याणकारी है हमारा गोवंश - इसे बचायें	04
श्रीकृष्ण का गोमाता के प्रति प्रेम और वात्सल्य	07
गोवंश-हत्या जैसा अक्षम्य अपराध आखिर कब मिलेगी इस बर्बरता से मुक्ति	09
गोसेवा - उत्तम सेवा	11
विश्व की सबसे महंगी गाय 'नेल्लोर'	12
'पंचगव्य चिकित्सा-रुग्णानुभव कार्यक्रम'	14
गौ-संरक्षण कानूनों को लागू करने की माँग को लेकर महाधरना	16
मध्य प्रदेश में गोवंश पर अत्याचार करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही	17
बीडिओ, दौराला को ज्ञापन सौंपा गया	18
An Appeal to New NDA Government	19
Cow Slaughter in India	21
How Stress and Anxiety Impacts a Cow's Physical and Mental Health?	24

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर - 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

हरिशंकर दीक्षित 'पथिक'

लोक कल्याणकारी है हमारा गोवंश - इसे बचायें

गोवंश पर मनुष्यों के अत्याचार का प्रारम्भ द्वापर में मथुरा के शासक कंस के शासन काल में हुआ था। कंस की सुरक्षा हेतु कंस के श्वसुर ने मथुरा में अपने यवन सैनिक नियुक्त किये थे। यह यवन सैनिक गोमांस भोजी होने के कारण गोकुल (नन्दग्राम) के बछड़ों का अपहरण इस प्रकार करते थे कि ऐसा प्रतीत होता था कि बछड़े को भेड़िया उठा ले गया है। इन सैनिकों के नायक **वृकासुर** का वर्णन अलंकारिक रूप से श्रीमद्भागवत् महापुराण में है, जिसे मारकर किशोर कृष्ण ने गो संरक्षण–संवर्धन हेतु गोवर्धन व्रत–पूजा का अनुष्ठान प्रारम्भ किया था, जो अब तक प्रतीक रूप में पहाड़ उठाने जैसे गुरुतर कार्य के रूप में मनाया जाता है।

द्वापर में गोपाल कृष्ण ने गोवंश की रक्षा और संवर्धन की जो परम्परा प्रारम्भ की थी उसके कारण हमारा गोवंश हमारे देश की स्वतन्त्रता प्राप्त होने तक लगभग सुखी रहा था। लोग गोवंश का आदर सम्मान परिवार के विशिष्ट सदस्य माता–पिता की भाँति करते थे और उसकी रक्षा हेतु अपने प्राणों की बाजी तक लगा देते थे। स्वतन्त्रता के पश्चात् दुर्भाग्य से देश की बागडोर ऐसे व्यक्ति के हाथों में आ गयी जो स्वयं को दुर्घटनावश हिन्दू होना मानता था और जिसकी रूचि सोवियत रूस के वाममार्ग तथा वहाँ होने वाली मशीनी कृषि में थी। सोवियत रूस में ट्रैक्टरों से जुतायी और थ्रेसरों से मड़ायी होती थी तथा रासायनिक उर्वरकों तथा कीट–खर–पतवारनाशी विष का प्रयोग कृषि में किया जाता था। इससे कम मानव परिश्रम से अधिक उत्पादन तो होता था किन्तु फसल की गुणवत्ता में भारी कमी भी हो गयी थी। वहाँ गाय सदृश पशु को केवल माँस और दुग्ध के लिये ही पाला जाता था।

दुर्घटनावश हिन्दू माने जाने वाले जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में गोवंश पर संकट के बादल छाने लगे। पंजाब–हरियाणा में ट्रैक्टरों का उपयोग प्रारम्भ हुआ तो बैल उपेक्षित होने लगे। वहाँ से फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर रेलगाड़ियों द्वारा बैलों को पश्चिम बंगाल भेजा जाने लगा और फिर तस्करी द्वारा पूर्वी पाकिस्तान

विडम्बना ही तो है कि जिस भा.रा. कांग्रेस का चुनाव चिह्न ''दो बैलों की जोड़ी'' था उस कांग्रेस के शासनकाल में ही गोवंश पर संकट आजादी के बाद प्रारम्भ होकर बढ़ता गया। शास्त्री जी के संक्षिप्त कार्यकाल में राहत के पश्चात् इन्दिरा कांग्रेस के समय में, जिसका चुनाव चिह्न ''गाय और बछड़ा'' था, यह संकट और बढ़ा। इसके पश्चात् कांग्रेस का चुनाव चिह्न पंजा होने पर यह संकट और बढ़ा।

(बांग्लादेश) में भेज दिया जाता था। बैलों को काम के अयोग्य घोषित करने के लिये इन्हें लँगड़ा–अन्धा करने जैसी वीभत्स क्रूरता तक की जाती थी। पंजाब और हरियाणा से बढ़ता हुआ ट्रैक्टररूपी दानव उत्तर प्रदेश तक अपने पाँव पसार रहा था किन्तु तब तक जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु हो गयी। कार्यवाहक प्रधानमंत्री गुलजारीलाल नन्दा के पश्चात लाल बहादुर शास्त्री जी प्रधानमंत्री बने।

शास्त्री जी ग्रामीण परिवेश में जन्मे–पले और पढ़े दूरदर्शी व्यक्ति थे। उन्होंने भारत जैसे छोटी जोत वाले देश में जहाँ कृषि कार्य हेतु प्रकृति प्रदत्त गोशक्ति और सम्पदा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, ट्रैक्टर के उपयोग को कृषि कार्य में उचित नहीं माना। उन्होंने अपने एक भाषण में कहा था कि अमरीका जैसे देश में एक किसान के पास कम से कम चौदह एकड़ कृषि योग्य भूमि है और हमारे देश में यह औसत एक एकड़ से भी कम है। अतः हमारे देश में ट्रैक्टर से कृषि करना उचित नहीं है, क्योंकि हमारे पास प्रचुर संख्या में गायें हैं। जो भविष्य में भी बछड़े उपलब्ध कराती रहेंगीं। शास्त्री जी ने परम्परागत कृषि यन्त्रों को उन्नत करने हेतु प्रयास किये। पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय में उन्नत बीज के साथ कृषि यन्त्रों पर भी ध्यान देना प्रारम्भ हुआ। फलस्वरूप तीन फाल वाले हलों, मिट्टी पलटने वाले हलों और मड़ायी–ओसायी आदि के यन्त्रों का निर्माण हुआ, जिससे कृषकों के साथ ही बैलों को भी कार्य में सहजता प्रतीत हुई। ट्रक के पहियों वाली बैलगाड़ी जिसे अवध क्षेत्र में डनलप गाड़ी कहा जाता है, के निर्माण ने परिवहन में बैलों को बड़ी राहत दी। वस्तुतः यही हरित क्रान्ति थी जिसने हमें अन्न क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना दिया। अब तक हमारे देश में चालीस हजार ट्रैक्टर आ चुके थे जिनमें से आधे बेकार होकर खड़े थे।

1965 भारत–पाक युद्ध के बाद ताशकन्द के समझौते हेतु ताशकन्द गये शास्त्री जी की रहस्यमयी मृत्यु के पश्चात् श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रधानमंत्री बनीं। हरित क्रान्ति अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर थी किन्तु शासन द्वारा विशेष ध्यान न दिये जाने के कारण कृषि यन्त्रों में और अधिक सुधार कार्य रुक गया। और अधिक उन्नत ट्रैक्टर बाजार में आ गये जिनकी कीमत उस समय एम्बेस्डर कार के बराबर लगभग दस हजार रुपये थी। खेत गिरवी रखकर सरल किस्तों में अदायगी और रियायती ब्याज आदि की सुविधा ने हरितक्रान्ति के कारण सम्पन्न हो चुके बड़े किसानों को आकर्षित किया। इससे किसानों के दालान में नाँद और खूंटों के स्थान पर ट्रैक्टर दिखने लगे और बैल उपेक्षित होने लगे। आजादी के बाद बैलों पर यह दूसरा आघात था जो आगे चलकर सम्पूर्ण गोवंश पर होने लगा, यहाँ तक कि इसके कारण ही आज हमारा गोवंश नाना प्रकार के कष्ट सहता, तड़पता–सिसकता विलुप्ति की कगार तक पहुँच चुका है।

विडम्बना ही तो है कि जिस भा.रा. कांग्रेस का चुनाव चिन्ह **''दो बैलों की जोड़ी'' था** उस कांग्रेस के शासनकाल में ही गोवंश पर संकट आजादी के बाद प्रारम्भ होकर बढ़ता गया। शास्त्री जी के संक्षिप्त कार्यकाल में राहत के पश्चात् इन्दिरा कांग्रेस के समय में, जिसका चुनाव चिह्न **''गाय और बछड़ा''** था, यह संकट और बढ़ा। इसके पश्चात् कांग्रेस का चुनाव चिह्न पंजा होने पर यह संकट और बढ़ा। भाजपा की गठबन्धन सरकार के प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी अपने कार्यकाल में सहयोगियों की खींचतान के कारण गोवंश के लिये कुछ भी न कर सके। फिर कांग्रेस गठबंधन (यू.पी.ए.) के शासनकाल में गोवंश की दशा और दयनीय हुई। इसी कालखण्ड में उ. प्र. में सपा–बसपा के शासनकाल में गो तस्करों–कसाइयों ने गोवंश की संख्या लगभग आधी कर दी। इस समय किसानों को खेतों की रखवाली नहीं करनी पड़ती थी क्योंकि साँड़ बनने

से पहले ही बछड़े समाप्त हो जाते थे।

वर्तमान संसदीय चुनाव में भाजपा की सीटें उत्तर प्रदेश में अप्रत्याशित रूप से कम होने में एक कारण छुट्टा गोवंश भी है जो किसानों को सिरदर्द से भी अधिक घातक प्रतीत होता है। ट्रैक्टर से जुतायी–बुआयी, रासायनिक उर्वरक और कीट–खरपतवारनाशी रसायनों का छिड़काव करने में धन तो लगता है किन्तु परिश्रम बहुत कम करना पड़ता है। कठोर परिश्रम से विमुख हो चुके किसान रात भर जागकर खेत की रखवाली करते भी हैं तो जरा सी चूक होने पर गोवंश खेत में घुस जाते हैं और फसल को हानि होती है। हरी–भरी फसल की हानि दुखदायी तो है ही। छुट्टा गोवंश पर नियन्त्रण करना, किसान सरकार की जिम्मेदारी मानते हैं। सरकार इनसे यह भी नहीं कह सकती है कि उन्हें छोड़ने वाले तो किसान ही हैं। कैसे कहें, वोट न मिलने का भय भी तो है। इसीलिये तो सरकार ने कान्हा उपवन जैसे गौ–आश्रय स्थल बनाये हैं।

अपर्याप्त और साधन–सुविधाहीन गौआश्रय स्थल किसानों और गोवंश की समस्या का समाधान नहीं है। गोवंश को उसका प्राकृत आश्रय स्थल चाहिये। वह हमारा घर–परिवार है। गोवंश वस्तुतः मनुष्य के परिवार का ही अंग है, यह प्राकृतिक ध्रुव सत्य है। यदि गौ आश्रय स्थलों को एक ऐसे परिसर के रूप में विकसित किया जाये जहाँ गोशक्ति और सम्पदा का समुचित उपयोग हो तो गोवंश को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा और गोसेवा करने वाले परिवारों का भरण–पोषण भी होता रहेगा। इसके लिये निम्नलिखित आधार पर प्रयोग करके देखने पर सत्य तथ्य स्पष्ट हो जायेंगे

लगभग दो वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले विदेशी बबूल के कटीले वन को काटकर उसे चार भागों में बाँटें। एक भाग में एक हजार गोवंश तथा गो सेवकों के रहने की व्यवस्था, एक भाग में चारा पानी उगाने का कार्य और शेष दो भागों में ऐसे वृक्षों का रोपण जिनके पत्ते पशु खाते हों जैसे गूलर–शहतूत–आम आदि के पौधे रोपकर उसे गोचरण भूमि के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। दो वर्ष के लगभग आयु के बछड़ों को बधिया कर बैल बनाना चाहिये। इनका प्रयोग जुताई–मंडायी, तेल कोल्हू तथा माल ढुलायी आदि में करें। साँड़ों की संख्या सौ गायों पर एक होनी चाहिये। इस प्रकार व्यवस्थित गौआश्रय स्थल का विकास करने से गोवंश का दुःख दूर होना निश्चित है और साथ–ही–साथ अनेक किसान भी उन्नत हलों आदि का प्रयोग कर बैलों द्वारा जैविक कृषि करने हेतु प्रोत्साहित होंगे। यदि दो–तीन गुना उत्पादन देने वाले तेल–गुड़ कोल्हुओं का निर्माण हो जाये तो तेल और गुड़ उद्योगों में बैलों का उपयोग होने लगेगा। इस प्रकार छुट्टा गोवंश की समस्या से छुटकारा तो मिलेगा ही ग्रामीण बेरोजगारी दूर होने से श्रमिकों और अत्यल्प भूमि वाले किसानों को रोजगार भी मिलेगा। साथ–ही–साथ कृषि में डीजल और रासायनिक उर्वरकों में लगने वाला धन भी बचेगा। सबसे बड़ी बात कृषि क्षेत्र प्रदूषण फैलाने के महापाप से बचेगा तो ग्रामीण क्षेत्र में रोगों का प्रसार भी बहुत कम होगा। इस प्रकार ग्रामीण समृद्धि में गुणात्मक वृद्धि होगी और किसानों की आय दो गुनी करने का संकल्प–स्वप्न साकार भी हो जायेगा। कृषक सम्मान निधि का प्रारूप बदलकर ऐसा किया जा सकता है।

चलभाष – 8765805322

श्रीमती शारदा मेहता (स्वतंत्र लेखिका)

श्रीकृष्ण का गोमाता के प्रति प्रेम और वात्सल्य

श्रीकृष्ण का गोमाता के प्रति प्रेम और वात्सल्य कई पौराणिक कथाओं और पुराणों में विस्तार से वर्णित है। उनका यह प्रेम हमें प्रकृति और जीव–जंतुओं के प्रति करुणा और संवेदनशीलता का महत्व सिखाता है।

श्रीकृष्ण का बाल्यकाल और गोचरण

श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ था, लेकिन उन्हें मथुरा से गोकुल भेज दिया गया ताकि वे कंस के क्रूर शासन से सुरक्षित रहें। गोकुल और वृंदावन में उनका बाल्यकाल बीता, जहां उन्होंने अपने बचपन का अधिकांश समय गोचरण में बिताया। यशोदा माता और नंद बाबा के घर पर पले–बढ़े श्रीकृष्ण को गायों से विशेष लगाव था। हर सुबह जब श्रीकृष्ण अपनी बांसुरी बजाते थे तब सभी गायें उनकी ओर आकर्षित हो जाती थीं। वे अपनी बांसुरी की मधुर धुन से गायों को इकट्ठा करते और उन्हें चराने के लिए जंगल ले जाते। इस दौरान वे अपने सखाओं (मित्रों) के साथ खेलते, गाते और नाचते थे। गायों की देखभाल करना, उन्हें साफ रखना और उनका ध्यान रखना श्रीकृष्ण के दैनिक कार्यों का हिस्सा था।

गोचरण और श्रीकृष्ण की बांसुरी

एक दिन श्रीकृष्ण अपने सखा ग्वालबालों के साथ गायों को चराने के लिए जंगल गए। उस दिन सभी ग्वालबाल खेलकूद में मग्न हो गए और गायें दूर तक फैल गईं। श्रीकृष्ण ने अपनी बांसुरी निकाली और एक मधुर धुन बजाने लगे। बांसुरी की धुन इतनी मनमोहक थी कि दूर–दूर तक फैली सभी गायें उसकी ओर खिंचती चली आईं। सभी ग्वालबाल भी बांसुरी की धुन सुनकर श्रीकृष्ण के पास आ गए। उन्होंने देखा कि सभी गायें अपनी गर्दन ऊपर उठाकर, कान खड़े करके, ध्यानपूर्वक बांसुरी की धुन सुन रही थीं। धीरे–धीरे सभी गायें श्रीकृष्ण के चारों ओर इकट्ठी हो गईं। यह दृश्य बहुत ही मनमोहक था। गायों के बीच में खड़े श्रीकृष्ण का वह दृश्य आज भी चित्रों और कथाओं में जीवंत है।

गायों का उनके प्रति इस अटूट प्रेम को देखकर श्रीकृष्ण ने उन्हें स्नेहपूर्वक सहलाया और उनके लिए ताजे हरे चारे का इंतजाम किया। उन्होंने गायों की देखभाल की और उन्हें पानी पिलाया। श्रीकृष्ण के इस प्रेम और देखभाल से गायें अत्यंत प्रसन्न हुईं और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

प्रमुख गौ–माताएँ

सुरभि : सुरभि को दिव्य गाय माना जाता है जो भगवान विष्णु के द्वारा पृथ्वी पर भेजी गई थी। सुरभि की पौराणिक कथाओं में महत्वपूर्ण भूमिका है, विशेषकर गोवर्धन पर्वत की कथा में।

नंदिनी : यह ऋषि वशिष्ठ की कामधेनु गाय की पुत्री थी। नंदिनी भी एक दिव्य गाय थी जो सभी इच्छाओं को पूरा करने में सक्षम थी।

धेनु : धेनु गाय भी पौराणिक कथाओं में उल्लेखित है और इसे विशेष आदर और सम्मान प्राप्त है।

गोवर्धन पर्वत और सुरभि गाय

एक महत्वपूर्ण कथा गोवर्धन पर्वत की है, जिसमें श्रीकृष्ण ने इंद्र देव के क्रोध से गोकुलवासियों को बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी अंगुली पर उठा लिया था। इंद्र देव ने गोकुलवासियों को दंड देने के लिए भारी वर्षा की थी, लेकिन श्रीकृष्ण ने उन्हें बचा लिया। इस घटना के बाद, सुरभि गाय ने इंद्र देव के पास जाकर उनसे श्रीकृष्ण की महानता को स्वीकार करने का आग्रह किया। इंद्र ने श्रीकृष्ण की महानता को मान्यता दी और उन्हें **"गोविंद"** के रूप में पूजने का वचन दिया।

गोमाता के प्रति श्रीकृष्ण का स्नेह

श्रीकृष्ण का गायों के प्रति स्नेह और देखभाल उन्हें एक आदर्श गोपालक के रूप में प्रस्तुत करता है। वे गायों के साथ बात करते, उन्हें प्यार से सहलाते और उनकी सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखते थे। गोमाता के प्रति उनका यह वात्सल्य हमें यह सिखाता है कि सभी प्राणियों के प्रति करुणा और प्रेम का भाव रखना चाहिए।

गोसेवा का संदेश

श्रीकृष्ण की गोसेवा का संदेश आज भी प्रासंगिक है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि हमें सभी प्राणियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए और उनके प्रति हमारी जिम्मेदारियों को कैसे निभाना चाहिए। गोमाता की सेवा करने से न केवल हमें आध्यात्मिक लाभ मिलता है बल्कि यह हमारे पर्यावरण और समाज के लिए भी लाभकारी है। श्रीकृष्ण का गायों के प्रति प्रेम हमें कई महत्वपूर्ण बातें सिखाता है, यथा – प्रकृति और प्राणियों के प्रति सम्मान, श्रीकृष्ण का उदाहरण हमें सिखाता है कि हमें प्रकृति और प्राणियों का सम्मान करना चाहिए। यह हमारे पर्यावरण को स्वस्थ और संतुलित रखने में मदद करता है। गोमाता से प्राप्त दूध, घी, मक्खन, गोबर, गोमूत्र, दही आदि सभी मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण घटक हैं। गोमाता के प्रति श्रीकृष्ण का स्नेह और करुणा यह दर्शाता है कि हमें सभी जीवों के प्रति करुणामय और संवेदनशील होना चाहिए।

हिंदू धर्म में गायों को विशेष स्थान प्राप्त है। उन्हें माँ का दर्जा दिया गया है और उनकी सेवा करना पुण्य का कार्य माना जाता है। श्रीकृष्ण का गोमाता के प्रति प्रेम धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को भी दर्शाता है। इसीलिए मानवहित में अवैध रूप से की जाने वाली गोहत्या को रोकना अनिवार्य है। गोशालाओं का विकास हो और गोधन का संवर्धन, संरक्षण होता रहे, यही मानव मात्र का लक्ष्य होना चाहिए।

गिरीश पंकज

गोवंश-हत्या जैसा अक्षम्य अपराध
आखिर कब मिलेगी इस बर्बरता से मुक्ति?

मानव समाज प्रारंभ में जंगलों में निवास करता था। वह पूरी तरह से सभ्य नहीं हो सका था। निर्वस्त्र विचरण करता था। तब खाने-पीने के साधन विकसित नहीं हो सके थे। आज जैसी समझ भी मानव में विकसित नहीं हुई थी। तब वह पशु-पक्षियों को मार करके खा जाया करता था। पेट भरने के लिए उसके पास और कोई विकल्प नहीं था, इसलिए किसी जीव का शिकार किया और उसे पका कर या कच्चा ही खा गया। वह एक अलग किस्म का बर्बर युग था, लेकिन अब तो हम तथाकथित रूप से सभ्य हो गए हैं। कहने को सभ्य समाज में रह रहे हैं। इसलिए अब तो हमें इस तरह की जीव-हत्याओं से मुक्त हो जाना चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आज भी ऐसे अनेक लोग हैं, जो जीव-हत्या कर उसे खाना अपनी शान समझते हैं। कुछ लोगों ने बड़ी चालाकी के साथ जीव-हत्या को अपने धर्म-कर्म से भी जोड़ दिया है। और इस अपराध में समान रूप से सभी धर्म के लोग शामिल हैं। किसी एक धर्म का नाम लेने का मतलब नहीं, क्योंकि हम सब उनसे परिचित हैं। हमारे समाज की विभिन्न जातियों में ऐसे असंख्य लोग हैं, जो किसी भी जीव की हत्या करने में कोई संकोच नहीं करते। इन पंक्तियों को लिखते हुए मेरी आँखें भर गई हैं। मैं यह सोचकर व्यथित हो जाता हूँ कि आखिर मानव समाज और कितना नीचे गिरेगा? कितना पतित होगा? आखिर उसमें यह चेतना, संवेदना कब जाग्रत होगी कि गाय एक दिव्य और सुंदर प्यारा जीव है, जिसके दूध का सेवन हम अपनी पौष्टिक्ता के लिए जीवन भर करते हैं।

दुर्भाग्यवश आज गोवंश को लोग बेरहमी से काट देते हैं। मैं गाय, बैल, भैंस सबकी बात कर रहा हूँ। लोग भेड़-बकरे को काट कर खा जाते हैं। और भी छोटे-छोटे पशु-पक्षी हैं, उनको भी बड़े चाव से

लोग खाते हैं। मैं कई बार जब रास्ते से गुजरता हूं तो किसी मीट शॉप को देख कर कुछ देर रुक कर वहाँ मीट खरीदते हुए लोगों के चेहरे को देखता हूँ। तब मैंने पाया है कि उनमें और सड़क के श्वान में कोई खास अंतर नहीं रह जाता। हमने देखा होगा कि कुत्ते खाने के लिए मांस के टुकड़े को बड़े चाव से देखते हैं कि जैसे ही मिले, उसे लपक कर खा लें। मांसाहार के मामले में अनेक लोग धर्मनिरपेक्ष हो गए हैं। बड़ी चालाकी के साथ एक जुमला उछालते हैं कि कोई क्या खाए, कोई क्या पहने; इस पर हमें टीका–टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। क्यों नहीं करनी चाहिए? अगर आप किसी जीव की हत्या करके खा जाएंगे तो टिप्पणी तो करनी ही पड़ेगी। आप पहनने के नाम पर तार –तार फटी जींस पहनेंगे, बदन दिखाऊ टॉप पहनेंगे/पहनेंगी, तो लोग टिप्पणी करेंगे ही। जिस तरह से मांसाहार करने वाले उसे अपना अधिकार समझते हैं, तो उसके विरुद्ध टिप्पणी करने वालों को भी यह अधिकार है कि वह विरोध करें। उनकी टिप्पणी से व्यथित होने की ज़रूरत नहीं है।

लोक-जागरण अतिआवश्यक

मैं कह रहा था कि कितना बर्बर परिवेश हो गया है हमारा। आश्चर्य की बात यह है कि हिंसा करते हुए लोग समझ ही नहीं पाते कि वे हिंसा कर रहे हैं। हमारे यहां बलि–प्रथा रही है। कहीं–कहीं दुर्भाग्यवश आज भी जारी है। इसके विरुद्ध लोक जागरण करने की आवश्यकता है। अगर गाय, बैल, भैंस या बकरे की बलि लेने की शर्मनाक परंपरा है तो उस परंपरा से लोगों ने मुक्ति भी पाई है। अगर इस परंपरा का अनुपालन करना ही

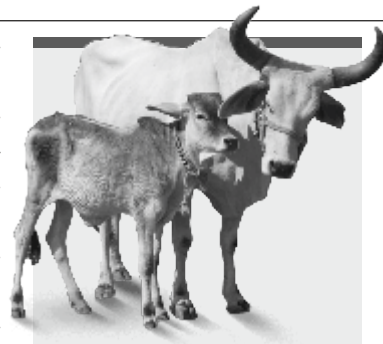

अगर गाय, बैल, भैंस या बकरे की बलि लेने की शर्मनाक परंपरा है तो उस परंपरा से लोगों ने मुक्ति भी पाई है। अगर इस परंपरा का अनुपालन करना ही है, तो उन जानवरों की छोटी–सी मूर्ति बनाकर या नारियल को प्रतीक बना कर भी तो बलि ली जा सकती है, ताकि आप की परंपरा बाधित न हो।

है, तो उन जानवरों की छोटी–सी मूर्ति बनाकर या नारियल को प्रतीक बना कर भी तो बलि ली जा सकती है, ताकि आप की परंपरा बाधित न हो, लेकिन लोग ऐसा करते नहीं। वे सजीव पशुओं की हत्या कर देते हैं और फिर उसका भक्षण भी कर लेते हैं। हिंसा के पहले पशु रुदन भी करता है लेकिन उस रुदन को हिंसक सुन नहीं पाते। पिछले दिनों 4 जून को जब 18वीं लोकसभा के नतीजे आए और तमिलनाडु भाजपा के अध्यक्ष अन्नामलाई चुनाव हार गए तो प्रतिद्वंदी पार्टी डीएमके ने बीच सड़क पर एक बकरे के ऊपर अन्नामलाई का चित्र टांग कर उसे काटकर जश्न मनाया और लोगों को बकरा बिरयानी खिलाई। जिस किसी ने यह घटना देखी–पढ़ी, वह विचलित हो गया। मैंने भी जब वह समाचार देखा तो कलेजा फट–सा गया। सोचने लगा कि कैसे कह दूँ, अभी हम सभ्य समाज में रह रहे हैं! व्यक्ति विशेष के प्रति ऐसी नफरत अकल्पनीय है। आप किसी की हार पर खुशी मना सकते हैं, किसी की जीत पर मिठाई बांट सकते हैं, लेकिन इस अवसर पर सरेआम एक जीव की हत्या निसंदेह बड़ा पाप है। लेकिन यह पाप करते हुए करने वाला मानता ही नहीं कि वह पाप कर रहा है। ऐसा इसलिए होता है कि उसमें यह चेतना ही विकसित नहीं हो सकी है कि वह गलत कार्य कर रहा है। मैंने कुछ ऐसे वीडियो देखे जब एक मुस्लिम बच्चा बकरे से लिपटकर रो रहा है कि उसे मत काटना। वह दहाड़ बार–बार कर रो रहा है और लोग उसे बकरे से अलग कर रहे हैं। यह दृश्य देखकर मुझे बहुत संतोष हुआ कि उस बालक के मन में अभी मनुष्यता है। उसके मन में करुणा है। उसे पता है कि इस जीव की हत्या की जाएगी इसलिए वह रो रहा है। उसे रोते हुए देखकर के दूसरे हँस रहे हैं। यह अपने आप में वीभत्स दृश्य है। लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसे दृश्यों से हमें दो–चार होना पड़ता है। हमारे जैसे लोग ऐसी विसंगति पर कलम तो चला सकते हैं, लेकिन इस अन्याय को खत्म नहीं कर सकते। हम तो सिर्फ यही कामना करते हैं कि यह समाज हिंसा से मुक्त हो। धार्मिक प्रथा के नाम पर पशुओं की बली रोकी जाए। यह काम तभी हो सकता है जब हमारे देश में एक ऐसी सरकार आए जो तमाम तरह के खतरे उठाकर पशु बलि–प्रथा को पूरी तरह से अवैध घोषित कर दे। मेरे जैसे करोड़ों लोग उसी महान दिन की प्रतीक्षा में हैं।

गोसेवा - उत्तम सेवा

– मधु भूतड़ा 'अक्षरा'

तैंतीस कोटि देवी देवता का,
निवास स्थान कहा जाता
गोमाता की उत्तम सेवा से,
मानव सुखद जीवन पाता।

गोमाता के खुर से मिलता,
अनंत आशीषों का वरदान
पावन चरणों की धूलि से,
सुख समृद्धि वैभव पान।

पुष्टि–वर्धक शक्ति मिलती,
गाय का दुग्ध अमृत धारा
गोसेवा से सबकी प्रगति,
खुश रहता यह जग सारा।

रोटी चारा गुड़ खिला कर,
पापों का समूल नाश होता
गाय माँ की ममता पाकर,
यह जीवन धन्य हो जाता।

गोमाता की पूंछ में रहता,
परमात्मा का अनूठा वास
माथे से जब उवारते इसे,
कट जाते दोष यही विश्वास।

कान्हा को प्रिय गाय का संग,
सप्त सुखों का नौलख हार
मनोकामना इन्द्रधनुषी रंग,
सकल मनोरथ गीता सार।

गोमूत्र से औषधि बनती,
गोबर से शुद्ध वातावरण
गोलोक में देह पहुँचती
मोक्ष धाम परमात्म शरण।

जीवन में सदा सत्कर्म करके,
करना चाहिए हमें सदुपयोग
गोमाता की कर उत्तम सेवा,
सुखद होता है जीवन संयोग।

गोमाता का जीवन है प्यारा,
राष्ट्रीय संस्कृति की पहचान
गोहत्या बंद करो यही नारा,
करें मिल कर सभी आह्वान।

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

विश्व की सबसे महंगी गाय 'नेल्लोर'

ब्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम् एष वां भागो निहितो। रत्नधेयाय दान्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च।।

(अथर्ववेद– 6.140.2)

'अर्थात्, हे दंतपंक्तियों! चावल, जौ, उड़द और तिल का सेवन करो। यह अनाज तुम्हारे लिए ही बनाये गए हैं। उन्हें मत मारो जो तुम्हारे माता–पिता बनने की योग्यता रखते हैं।' भारतवर्ष की गौएं अपनी भिन्न–भिन्न प्रजातियों में अपनी गुणवत्ता, अपनी कद काठी के लिए और भिन्न–भिन्न रंगों के लिए विश्व विख्यात हैं। ऐसे ही अपने चमकीले सफेद फर और कंधों पर विशिष्ट बल्बनुमा कूबड़ (कुकुद) से सबको आकर्षित करने वाली **नेल्लोर प्रजाति की 'वियाटिना–19 एफआईवी मारा इमोविस'** के नाम से जानी जाने वाली गोमाता ने विश्व भर में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस घटना ने पशुधन प्रेमियों और सामान्य जन को भी अत्यंत आकर्षित किया है।

नेल्लोर प्रजाति की गाएँ मूल रूप से भारत की हैं। इनका नाम आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले के नाम पर रखा गया है। यह प्रजाति ब्राजील की महत्वपूर्ण प्रजातियो में से एक बन गई है। भारतीय ओंगोल मवेशियों से उत्पन्न हुई यह प्रजाति वैज्ञानिक रूप से **बोस इंडिकस** के नाम से जानी जाती है।

पशुधन नीलामी के क्षेत्र में वियाटिना–19 एफआईवी मारा इमोविस के नाम से जानी जाने वाली नेल्लोर की यह गाय संपूर्ण विश्व में अब तक बेची गई गायों में सबसे महंगी गाय है। ब्राजील में एक नीलामी में उसे 4.8 मिलियन डॉलर (40 करोड़ रुपये) में खरीदा गया है। यह अविश्वसनीय मूल्य, गाय की विशेषता और उसमें व्याप्त गुणों की महत्ता को दर्शाने के साथ–साथ भारतीय जनों को जागरूक भी करती है कि हमें अपनी स्वदेशी गायों की अमूल्य धरोहर के मूल्य को समझना होगा। जिस दिन हम भारतीय इसे समझ जाएँगे, यह सच है कि उस दिन देश में दूध की नदियाँ बहेंगीं और जिस देश में दूध की नदियाँ बहतीं

हों वहाँ धन–धान्य, आरोग्य की बरसात होती है। पशुधन के इतिहास में यह एक मील का पत्थर है।

इस प्रजाति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्रजनन क्षमता है। नेल्लोर गायों का प्रजनन जीवन लंबा और प्रचुर होता है। हर परिस्थिति और जलवायु में पनपने की क्षमता रखने वाली यह प्रजाति विदेश में सिर्फ इसलिए नहीं पसंद की जाती कि उसका दूध लाभदायक है, अपितु उसकी माँग और उसकी जनसंख्या की बढ़ोतरी का कारण उसका स्वादिष्ट मांस है। यहाँ के लोगों के द्वारा स्वाद से समझौता किए बिना कम कैलोरी, कम वसा वाले मांस को आहार में शामिल किया जाता है। अतः इन देशों में इसकी अधिक माँग है।

विदेशों में गायों की अच्छी प्रजाति और विशेषताओं के लिए प्रतियोगिता की जाती है। 'सन् 1991, ह्यूस्टन के लाइवस्टॉक शो और रोडियो में प्रदर्शित किया गया था, जब एक शुद्ध नस्ल के नेलोर स्टीयर ने दर्जनों हाइब्रिड और यूरोपीय स्टीयर के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करते हुए **"सर्वश्रेष्ठ समग्र स्वाद"** प्रतियोगिता जीती थी।' इस प्रकार इस प्रतियोगिता में पाया गया कि नेल्लोर प्रजाति की गायों का मांस सबसे स्वादिष्ट होता है। ब्राजील नेल्लोर का का सबसे बड़ा प्रजनक बन गया है। वहाँ से इस प्रजाति को अर्जेंटीना, पैराग्वे, वेनेजुएला, मध्य अमेरिका, मैक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका और कई अन्य राज्यों में भेजा जाता है।

आज भी हम अपनी देशी गायों की विशेषताएँ, उनके गुणों से अनभिज्ञ हैं। एक ओर जहाँ उसके इस अविश्वसनीय मूल्य; उसकी विशेषता; उसकी महत्ता; उसके आकर्षण और गुणों का पता चलता है, वहीं इस बात का अत्यंत दुःख है कि ऐसी अमूल्य धरोहर को उनके मांस भक्षण हेतु भारत देश से बाहर भेजा जा रहा है। यदि वही गाएँ हमारे देश में रहें; उनका ध्यान रखा जाए; सेवा की जाए और उनकी प्रजाति को बढ़ाने में योगदान दें तो देश का चेहरा कुछ और हो जाएगा, परंतु विषाद इस बात का होता है कि आज भी हमारे देश में गोमाता का निर्यात हो रहा है, जिसका कारण स्पष्ट दिखता है, उसकी अच्छी माँग और उसके बदले में अच्छी कमाई।

आखिर कब तक भारत देश में ये सिलसिला चलता रहेगा? जहाँ गोमाता को सिर्फ इसलिए नीलाम या बेचा जा रहा है कि उसके बदले में अपने स्वार्थ के साधन उपलब्ध कराए जा सकें। यह एक चिंता का विषय है साथ ही विचारणीय। अतः भारत देश को गायों के निर्यात पर कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है। ऋग्वेद में कहा गया है –

घृतं वा यदि वा तैलं, विप्रोनाद्यान्नखस्थितम !
यमस्तदशुचि प्राह, तुल्यं गोमासभक्षणः !!
माता रूद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट!!

(ऋग्वेद– 8.101.15)

'अर्थात् रुद्र ब्रह्मचारियों की माता, वसु ब्रह्मचारियों के लिए दुहिता के समान प्रिय, आदित्य ब्रह्मचारियों के लिए बहिन के समान स्नेहशील, दुग्धरूप अमृत की केन्द्र इस निर्दोष अखंडनीय गौ को कभी मत मार। ऐसा मैं प्रत्येक विचारशील मनुष्य के लिए उपदेश करता हूँ।'

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

पंचगव्य चिकित्सा-रुग्णानुभव कार्यक्रम

गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार का ***'पंचगव्य चिकित्सा रुग्णानुभव कार्यक्रम'*** शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत दि. 08 जून 2024 शनिवार को संपन्न हुआ। गोविज्ञान के संस्थापक स्व. श्यामजी बल्लाळ की स्मृति में प्रत्येक वर्ष यह कार्यक्रम नागपुर के विभिन्न नगरों में करने का प्रयास रहता है।

कार्यक्रम की शुरूआत डॉ. गौरी के धन्वंतरी स्तवन से हुई। डॉ. धनंजय हांगे ने पंचगव्य औषधियों का प्रभाव शरीर पर कैसा होता है, यह बताया। गो.वि.अ.केंद्र की सहसचिव और प्रधान वैद्य डॉ. नंदिनी भोजराज ने केंद्र की भूमिका बताई। AIIMS, CIIMS जैसे आधुनिक वैद्यक शास्त्र के हॉस्पिटल से जुडकर अगर रूग्ण के रोग का निवारण करते है तो कम समय में कम पैसा खर्च करके यशस्वी इलाज हो सकता है, यह बताया।

श्री. तेलरांधे ने अपनी श्रीमती के कैन्सर का इलाज पंचगव्य चिकित्सा से 18 वर्ष पूर्व नियमितता से किया था। जिसकी वजह से आज तक वह रूग्णा कीमो–रेडिओ न कराते हुए भी पंचगव्य के साथ स्वास्थ्य का अनुभव करती है। वैदेही दिवाण ने भी कीमोथैरपी और रेडिएशन लेते हुए कैन्सरग्रस्त होते हुये भी उस इलाज की तकलीफ उन्हें नहीं हुई और 5 वर्ष से नियमित पंचगव्य चिकित्सा से पूर्ण स्वस्थ जीवन बिता रही हैं, ऐसा बताया। श्री. वासुदेव ढोबळे ने Cervical और Lumber spondylitis से राहत पाने के लिए केंद्र में पंचकर्म चिकित्सा का बस्ती का उपयोग हुआ और अब दोनों बेल्ट का वापर न करते हुये 16 वर्ष से अच्छे से चल सकते हैं, यह बताया। मेघा दाणी और वर्षा पौनिकर को अम्लपित्त और अर्धशीशी जैसी पित्त की व्याधियाँ केंद्र से मिले पंचकर्म और पंचगव्य औषधियों से राहत मिली। श्री. दीपक हलदुले ने Psoriatic

Arthritis से एक कदम भी न चलने का अनुभव केंद्र में आकर पिछले ही वर्ष गिरनार पर्वत पर पांच हजार कदम चढ़कर और उतरकर आये, यह बताया। Corn से भी 90 प्रतिशत उपशय मिलने का अनुभव बताया। श्री. अनंत देवतारे ने उनके Muscle spasm का इलाज केंद्र में पंचकर्म और, पंचगव्य औषधियों से पूर्णतः यशस्वी हुआ बताया। आँखों के रोग के लिए Steroids के Injection लेते थे, उसके साथ पंचगव्य चिकित्सा करने पर Injections की Frequency कम हुई, बताया। वरूड के डॉ. चरण सोनारे ने Liver Psoriasis, Ascitis का पेशेंट जिसके लिए एलोपैथी डॉक्टरों ने हाथ ऊपर कर दिये थे, वह ठीक हो गया बताया। बी.पी. की दवा बंद हो गई और वजन भी कम हो गया बताया। संस्था के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. हेमंत जांभेकर ने विदेश में अपनी लडकी की सूतिकावस्था में सामान्यतः होने वाले कष्टों से पंचगव्य औषधियों से जल्दी राहत मिलने का अनुभव बताया। महाविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. सुमिता जैन के मार्गदर्शन पर LIT और NEERI जैसे वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य करने वाली संस्था के साथ उनकी छात्र डॉ. प्राची घोडेस्वार का पेस्ट रिप्लान्ट का संशोधन पंचगव्य के आधार पर जारी है, यह बताया। का. हरडे चूर्ण के सेवन से डॉ. सोनल वानखेडे ने अपने रुग्ण का Cholesterol normal हुआ, बताया। डॉ. सुमिता जैन ने सूतिका के SacroIliatis व्याधि में प्रतिदिन 60ml गोघृत देकर उपशय दिलाया, जिससे सी आर पी और इ एस आर normal हुआ।

महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. सुभाष राऊत ने गोविज्ञान केंद्र की प्रभावी औषधियों का उपयोग रूग्णालय के OPD में विधिवत् करेंगे और जरूरत पडने पर Operation Theator का भी उपयोग करने देंगे, ऐसा आश्वासन दिया। Central India Institute of Medical sciences के Director Research डॉ. राजपालसिंग कश्यप ने सामाजिक स्वास्थ्य के उपलब्धि के लिए एलोपैथी, आयुर्वेदिक, यूनानी होमियोपैथी आदि सब दीवारों को गिराकर मिलजुल कर काम करने के लिए कहा। इस संस्था के सचिव श्री सनत कुमार गुप्ता ने सराहना की और सभी उपस्थित मान्यवर, रुग्ण, विद्यार्थी, शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट किया। महाविद्यालय के निदान विभाग के डॉ. घनश्याम कोडवानी उपस्थित थे। डॉ. विधि यादव ने सुंदर ढ़ंग से मंच संचालन किया।

गौ-संरक्षण कानूनों को लागू करने की माँग को लेकर महाधरना

हैदराबाद, (हिन्दी मिलाप)। विश्व हिन्दू परिषद गोरक्षा विभाग (देशी गोवंश रक्षण संवर्धन समिति) के सदस्यों ने राज्य सरकार से गौ संरक्षण कानूनों को सख्ती से लागू करने की माँग को लेकर इंदिरा पार्क के समीप महाधरना दिया।

गत माह इंदिरा पार्क के समीप आयोजित महाधरना में सरकार से गौ संरक्षण की माँग के साथ प्रश्न किया गया कि हैदराबाद शहर व आस पास 1.5 लाख कैमरे लगाए गए हैं। देश की सबसे हाईटेक पुलिस की बिल्डिंग भी है। पुलिस चेक पोस्ट भी हैं, फिर भी शहर में गोवंश कैसे आ रहे हैं। हर गली में कैमरे लगे हैं। पुलिस की पेट्रोलिंग वैन को फिर भी यह सब दिखाई नहीं दे रहा। पुलिस की नाक के नीचे यह सब हो रहा है। इतने पहरे के बावजूद शहर में गायों व गोवंश को काटने के लिए लाया जा रहा है। प्रतिनिधियों ने कहा कि पुलिस 100 नंबर डायल करने के बाद गाय पकड़ रही है, तो फिर उसे कहाँ और किस गौशाला में रखा जा रहा है। कानून है तो सख्ती से लागू क्यों नहीं किया जाता। मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने कहा है कि गोवंश को कटने से बचाने के लिए पुलिस तीन–तीन शिफ्ट में 8–8 घंटे कार्य करेगी। प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री से मांग की कि पुलिस के साथ गोरक्षकों को भी बैठने की अनुमति दी जाए। जो गोरक्षक गायों को बचा रहे हैं, उन्हें प्रताड़ित न करें और कोई केस भी बुक न करें।

प्रतिनिधियों ने राज्य सरकार से गोहत्या निषेध अधिनियम को सख्ती से लागू करने की माँग करते हुए कहा कि प्रदेश में अवैध पशु बाड़ों को तत्काल बंद किया जाए। कब्जे वाली गोचर भूमि को मुक्त कराया जाए। राज्य सरकार के तत्वावधान में प्रत्येक जिले में गौशालाएँ स्थापित की जानी चाहिए। धर्मस्व अनुभाग के अंतर्गत सभी मंदिरों में गायों का पालन किया जाना चाहिए। गौ–आधारित

कृषि करने वाले किसानों को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया जाए। भाग्यनगर बोराबंडा के बज्जबागुड़ा, नरसिंगी आदि स्थानों पर लगने वाले पशु मेलों को तत्काल बंद किया जाए। भाग्यनगर और राज्य के प्रमुख शहरों और कस्बों के सभी उपनगरों में विशेष पुलिस चेक पोस्ट स्थापित किए जाने चाहिए, जो 20 जुलाई तक जारी रहें। तस्करी के लिए ले जाए जा रहे मवेशियों की सुरक्षा के साथ परिवहन में प्रयुक्त ट्रकों को भी जब्त कर मालिकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो। सरकार को गोवंश के संरक्षण के लिए कैटल फंड स्थापित करने चाहिए। तेलंगाना उच्च न्यायालय का आदेश डब्ल्यूपी संख्या 2021 के 15948 को तुरंत लागू करने की माँग की गयी।

प्रतिनिधियों ने माँग की कि गोसंतति की अवैध तस्करी रोकी जाए, ऑटो और लॉरी के साथ कंटेनरों में कचरा परिवहन करने वाले माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। बिना सरकारी अनुमति के सैकड़ों निर्माण स्थलों को बंद किया जाना चाहिए। समूहों के बीच सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जानवरों के अवशेषों से तेल और चाय पाउडर ब्रांडी बनाने वाली फैक्ट्रियों को बंद

किया जाना चाहिए। गाँवों में मंदिरों के लिए छोड़े गये गोवंश को नीलामी के माध्यम से बुतपरस्तों को बेचना हिंदुओं की भावनाओं को ठेस पहुँचाना है। इसलिए उन नीलामियों को रोका जाना चाहिए। हालाँकि कानून कहता है कि स्वस्थ गोवंश की हत्या नहीं की जानी चाहिए, लेकिन इसके अलावा स्वस्थ बैलों और बछड़ों की हत्या करने वाले लोगों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज किए जाएँ।

अखिल भारतीय गौ सेवा फाउंडेशन, लव फॉर काऊ फाउंडेशन और अन्य संगठनों ने सरकार से इस संबंध में पुरजोर अपील की। लव फॉर काऊ फाउंडेशन के अध्यक्ष जसमत भाई पटेल, अखिल भारतीय गौ सेवा फाउंडेशन के अध्यक्ष बालकृष्ण गुरु स्वामी, क्षेत्र गौ सेवा प्रमुख अकुठोटा रामा राव, विश्व हिन्दू परिषद दक्षिण भारत गोरक्षा प्रमुख टी. यादगिरी राव, क्षेत्रीय गोरक्षा प्रमुख वेंकन्ना, जी. रमेश, मल्लेश गौड़, कासा श्रीनिवास, श्रीकांत, श्याम श्रीराम रेड्डी, अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय सचिव स्वामी कमलेश महाराज, विजयवाड़ा के वीरा धर्मजा स्वामीजी, दिल्ली के योगानंद स्वामी, विहिप के राम राजू, विहिप के शशीधर, ऑल इंडिया जैन माइनॉरिटी फेडरेशन तेलंगाना के संयोजक मुकेश चौहान, कांची वेल्फेयर सोसाइटी की अध्यक्ष परमेश्वरी शर्मा, गुजराती ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष तरुण मेहता, सेव काऊ फाउंडेशन के विजयराम, डॉ. गुम्माडी वल्ली श्रीनिवास व अन्य इस अवसर पर उपस्थित थे।

मध्य प्रदेश में गोवंश पर अत्याचार करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही

भोपाल। गोवंश पर अत्याचार के जघन्य कृत्य को किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। मंडला जिले के ग्राम भैंसवाही में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए करीब 150 गायों को बचाया है। आरोपियों के खिलाफ 11 एफआईआर दर्ज हुई हैं। इन 11 अतिक्रमणकर्ताओं के 11 मकान व 6 गोदामों को अतिक्रमण मुक्त करते हुए कुल 12 हजार 728 वर्गफीट क्षेत्र से अतिक्रमण हटाया गया है। गोवंश पर अत्याचार करने वालों को स्पष्ट चेतावनी दी गई है कि ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई सतत जारी रहेगी।

— डा.मोहन यादव

बीडिओ, दौराला को ज्ञापन सौंपा गया

मेरठ (उ.प्र.)। विश्व हिंदू परिषद गोरक्षा विभाग (मेरठ प्रांत) के एक प्रतिनिधि मंडल ने जितेंद्र कंबोज (समोली प्रांत) सह मंत्री विश्व हिंदू परिषद गोरक्षा विभाग, मेरठ प्रांत के नेतृत्व में बीडिओ, दौराला को एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में मांग की गई है कि निराश्रित गोवंश के समाधान हेतु एवं मछरी गांव में नवीन गौशाला का फंड जारी कर उसे अति शीघ्र बनवाया जाय।

ज्ञापन देने वालों में सर्वश्री चौधरी अमन सिंह जिला अध्यक्ष सरधना, चौधरी किशोर जिला सामाजिक समरसता प्रमुख, नारायण लोहिया जिला उपाध्यक्ष, जितेंद्र मोहम्मदपुर प्रखंड, सहसंयोजक प्रदुमन जैन, मंडल अध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा भाजपा मुकेश दौराला, रामनाथ चमोली, भंवर सिंह कंबोज, बिने काका धर्मेंद्र, सौरभ आदि कार्यकर्ता शामिल थे।

गौकशी की घटना का वांछित इनामी बदमाश मुठभेड़ में गिरफ्तार

बुलन्दशहर (उ.प्र.)। जनपद में पुलिस ने गत दिवस गौकशी की घटना में वांछित 25 हजार रुपए के इनामी बदमाश को मुठभेड़ के दौरान घायलावस्था में गिरफ्तार किया है। उससे असलहा, कारतूस व बाइक बरामद की गई है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार जी ने बताया कि गत माह तड़के तीन बजे अरनिया पुलिस सूचना के आधार पर शाहपुर बम्बे के पास संदिग्ध वाहन/व्यक्तियों की चैकिंग कर रही थी, तभी दो बाइकों पर सवार चार संदिग्ध व्यक्ति आते दिखे। रुकने का इशारा किया तो बदमाशों ने मोटरसाइकिलों को पीछे मोड़ लिया। एक बाइक सवार अंधेरे में भाग गया, दूसरा बदमाश जरारा के जंगल की ओर जाने वाले रजवाहे के पुल की तरफ भागने लगा। तभी हड़बड़ाहट में बाइक फिसल गई। गिरफ्तार बदमाश की पहचान थाना अरनिया जनपद बुलंदशहर के ग्राम रोहंदा निवासी शाहरुख उर्फ टीटू के रूप में हुई है।

घायल बदमाश को जिला अस्पताल बुलन्दशहर में भर्ती कराया गया है। बदमाश शाहरूख पर बुलंदशहर, अलीगढ़ मथुरा में दो दर्जन गोकशी के मुकदमे दर्ज हैं तथा थाना अरनिया में दर्ज मुकदमे में वांछित चल रहा था।

CA. Jasraj Shrishrimal (Advocate)

AN APPEAL TO NEW NDA GOVERNMENT

Pass the Draft Prevention of Cruelty to Animals Act (Amendment) Bill 2022 and to provide Income Tax relief to the Goushalas in the forthcoming Budget-2024.

We heartily congratulate the new NDA government 3.0 for taking the reigns of the new government and pray God for long life to our beloved Prime Minister Shri Narendra Damodardas Modi. Dumb, mute and hapless animals have been waiting for a very long time of 10 years to get justice from the NDA government who always cherished freedom from pain, injury, diseases, thirst, hunger, malnutrition, fear and distress for Gou Mata and others animals. The last NDA government though deserves applause for submitting to the cabinet for passing the Draft Prevention of Cruelty to Animals Act (Amendment) Bill, 2022 dated 21st November, 2022 but failed to do so. Unfortunately the same is pending and never saw the light of the day as it related to voiceless animals who do not have a power to cast Vote or speak for themselves. However, Gou Mata has given a new opportunity to the NDA government to do justice, show compassion, love and humbleness to these nature's creation. We therefore, humbly request the NDA government to pass the said Draft Bill in the immediate next Parliament session as the first Bill, to create history and do justice for the animal kingdom and declare our great respect to our Constitutional values as enshrined in Article 48, 48A, 51A(g) and other related

Articles. The Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960, was enacted 64 years back and was never amended to keep pace with the time. To illustrate a paltry fine of Rs. 10/- for first offence and Rs. 25/- for second and subsequent offence for committing cruelty on animals is prescribed under the said Act of 1960. Similarly, many provisions of the Act have become insignificant, unworkable, undeterred and allows criminals to commit cruelty fearlessly and unmindful of the said Law. The old Act has become so casual that the criminals do not bother to respect same and brutally violate, breach and break it.

CSR Donations:

Many companies donate CSR funds to organisations, where companies derive mutual benefit indirectly, politically, friendly and reciprocally and for many other hidden reasons. A special provision shall be made in CSR Donations so that Companies are required to at least donate 5% of total CSR donations required mandatorily, to the Goushalas.

80G Donations:

Budgets have been passed in past many years but no respect has been shown to highest noble charity work for Gou Mata and has treated work of Charity for Gou Mata on par with other charitable works whether deserving or not. We request the NDA Government to give special attention to Gou Mata, which is highly respected and sacred. Therefore, a rebate of 75% of the Donations shall be given from the Total Income as computed under the Income Tax Act, for the Donations given to the Goushalas so that donors will preferably and specially come forward for this noble cause.

Dr. Aastha Pathak

COW SLAUGHTER IN INDIA

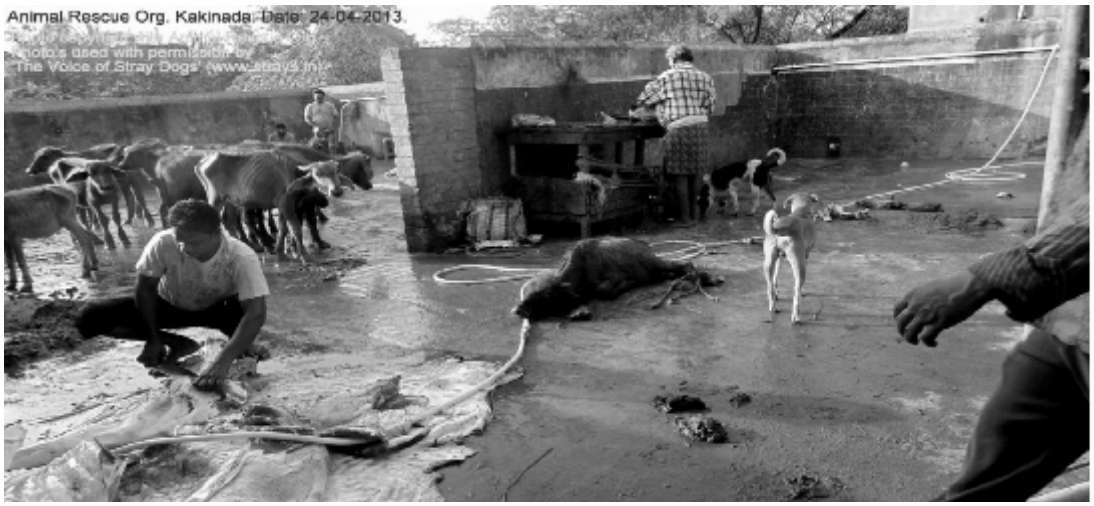

Cattle slaughter in India, especially cow slaughter, is controversial because of cattle's status as endeared and respected living beings to adherents of Dharmic religions like Hinduism, Buddhism, Sikhism and Jainism. Also, many of the Zoroastrians/Parsis living in India stopped eating beef out of respect, as it is sacred for the people of Dharmic religions; while it is an acceptable source of meat in Abrahamic religions like Islam, Christianity and Judaism. Cow slaughter has been shunned for a number of reasons, specifically because of cow's association with Lord Krishna in Hinduism, and because cattle have been an integral part of rural livelihoods as an economic necessity. Cattle slaughter has also been opposed by various Indian religions because of the ethical principle of Ahimsa (non-violence) and the belief in the unity of all life. Legislation against cattle slaughter is in place throughout most states and territories of India.

On 26 October 2005, the Supreme Court of India, in a landmark judgement, upheld the constitutional validity of anti-cow slaughter laws enacted by various state governments of India. 20 out of 28 states in India had various laws regulating the act of slaughtered cow, prohibiting the slaughter or sale of cows. Arunachal Pradesh, Goa, Kerala, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Tripura, West Bengal, Dadra and Nagar Haveli & Daman and Diu and Puducherry, are the places where there are no restrictions on cow slaughter. The ban in Jammu & Kashmir and Ladakh was lifted in 2019. As per existing meat export policy in India, the export of beef (meat of cow, oxen and calf) is prohibited. Bone in meat, carcass, half carcass of buffalo is also prohibited and is not

permitted to be exported. Only the boneless meats of buffalo, goat, sheep and birds are permitted for export. India feels that the restriction on export to only boneless meat with a ban on meat with bones will add to the brand image of Indian meat. Animal carcasses are subjected to maturation for at least 24 hours before deboning. Subsequent heat processing during the bone removal operation is believed to be sufficient to kill the virus causing foot and mouth disease.

The laws governing cattle slaughter in India vary greatly from state to state. The "Preservation, protection and improvement of stock and prevention of animal diseases, veterinary training and practice" is Entry 15 of the State List of the Seventh Schedule of the Constitution, meaning that State legislatures have exclusive powers to legislate the prevention of slaughter and preservation of cattle. Some states permit the slaughter of cattle with restrictions like a "fit-for-slaughter" certificate which may be issued depending on factors like age and sex of cattle, continued economic viability etc. Others completely ban cattle slaughter, while there is no restriction in a few states. On 26 May 2017, the Ministry of Environment of the Government of India led by Bharatiya Janata Party imposed a ban on the sale and purchase of cattle for slaughter at animal markets across India, under Prevention of Cruelty to Animals statutes, although Supreme Court of India suspended the ban on sale of cattle in its judgement in July 2017, giving relief to beef and leather industries.

Indian religions

The majority of scholars explain the veneration for cattle among Hindus in economic terms, which includes the importance of dairy in the diet, use of cow dung as fuel and fertilizer, and the importance that cattle have historically played in agriculture. Ancient texts such as Rig Veda, Puranas highlight the importance of the cattle. The scope, extent and status of cows throughout during ancient India is a subject of debate. According to D. N. Jha's 2009 work The Myth of the Holy Cow, for example, cows and other cattle were neither inviolable nor revered in the ancient times as they were later. Grihya sutra recommends that beef be eaten by the mourners, after a funeral ceremony, as a ritual rite of passage. According to Marvin Harris, the Vedic literature is contradictory, with some suggesting ritual slaughter and meat consumption, while others suggesting a taboo on meat eating.

The protection of animal life was championed by Jainism, on the grounds that violence against life forms is a source of suffering in the universe and a human being creates bad karma by violence against any living being. The Chandogya Upanishad mentions the ethical value of Ahimsa, or non-violence towards all beings. By mid 1st millennium BCE, all three major Indian religions – Hinduism, Jainism and Buddhism – were championing non-violence as an ethical value, and something that affected one's rebirth. According to Harris, by about 200 CE, food and feasting on animal slaughter were widely considered as a form of violence against life forms, and became a religious and social taboo. Ralph Fitch, a gentleman merchant of London and one of the earliest English travellers to India, wrote a letter home in 1580 stating, "They have a very strange order among them – they worship a cow and esteem much of the cow's dung to paint the walls of their houses ... They eat no flesh, but live by roots and rice and milk."

According to Nanditha Krishna the cow veneration in ancient India during the Vedic era, the religious texts written during this period called for

non-violence towards all bipeds and quadrupeds, and often equated killing of a cow with the killing of a human being specifically a Brahmin. Nanditha Krishna stated that the hymn 8.3.25 of the Hindu scripture Atharvaveda (≈1200–1500 BCE) condemns all killings of men, cattle, and horses, and prays to god Agni to punish those who kill.

According to Harris, the literature relating to cow veneration became common in 1st millennium CE, and by about 1000 CE vegetarianism, along with a taboo against beef, became a well accepted mainstream Hindu tradition. This practice was inspired by the belief in Hinduism that a soul is present in all living beings, life in all its forms is interconnected, and non-violence towards all creatures is the highest ethical value. Vegetarianism is a part of the Hindu culture. God Krishna, one of the incarnations (Avatar) of Vishnu, is associated with cows, adding to its endearment.

With the advent of British rule in India, eating beef along with drinking whiskey as it was part of their food culture, in English-language colleges in Bengal, became a method of fitting in into the British culture. Some Hindus, in the 1830s, consumed beef to show how they "derided irrational Hindu customs", according to

Barbara Metcalf and Thomas Metcalf.

The reverence for the cow played a role in the Indian Rebellion of 1857 against the British East India Company. Hindu and Muslim sepoys in the army of the East India Company came to believe that their paper cartridges, which held a measured amount of gunpowder, were greased with cow and pig fat as it was the best and easily accessible method available at that time for greasing weapons since cattle and pigs had a good amount of fat in them.

Historians argue that the symbol of the cow was used as a means of mobilizing Hindus.In 1870, the Namdhari Sikhs started the Kuka Revolution, revolting against the British, and seeking to protect the cows from slaughter. A few years later, Swami Dayananda Saraswati called for the stoppage of cow slaughter by the British and suggested the formation of Go-samvardhani Sabhas. In the 1870s, cow protection movements spread rapidly in Punjab, North-West Frontier Province, Oudh State (now Awadh) and Rohilkhand. The Arya Samaj had a tremendous role in skillfully converting this sentiment into a national movement.

The first Gaurakshini sabha (cow protection society) was established in the Punjab in 1882. The movement spread rapidly all over North India and to Bengal, Bombay, Madras presidencies and Central Provinces. The organization rescued wandering cows and reclaimed them to groom them in places called gaushalas (cow refuges). Charitable networks developed all through North India to collect rice from individuals, pool the contributions, and re-sell them to fund the gaushalas. Signatures, up to 350,000 in some places, were collected to demand a ban on cow sacrifice. Between 1880 and 1893, hundreds of gaushalas were opened.

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

HOW STRESS AND ANXIETY IMPACTS A COW'S PHYSICAL AND MENTAL HEALTH?

Stress and anxiety significantly affect a cow's physical and mental health, manifesting in various detrimental outcomes. These stressors can arise from environmental changes, handling practices, social dynamics, or health challenges, leading to physiological responses such as altered immune function, reduced milk yield, and compromised growth. Chronic stress and anxiety can also lead to the development of mental health disorders in cows, such as depression and anxiety. For instance, stressed cows often exhibit reduced feed intake and altered rumination patterns, which can impair nutrient absorption and digestive efficiency. These conditions significantly impact the animal's quality of life, leading to decreased interest in their surroundings, reduced appetite, and diminished social interactions. Severe cases may even result in self-destructive behaviors, such as excessive licking or biting, driven by neuroendocrine disruptions that alter normal behavioral patterns.

Socially, stress can lead to increased aggression or withdrawal, disrupting herd dynamics and potentially leading to injuries. Economically, these stress-induced issues can translate into significant financial losses for farmers due to decreased milk production, lower weight gains, higher veterinary costs and increased culling rates. Understanding the mechanisms through which stress and anxiety influence bovine health is crucial for

developing effective management strategies. Implementing stress mitigation practices, such as improved housing conditions, gentle handling and enriched environments, can enhance the welfare and productivity of dairy and beef cattle, ultimately leading to better economic outcomes for the livestock industry. The effects of stress and anxiety on cows can be substantial, both physically and mentally, making it imperative to address these issues comprehensively.

Physical Effects:

Weight loss is one of the most common physical effects of stress and anxiety in cows. This can occur due to a variety of factors, such as reduced feed intake, increased metabolic rate and reduced nutrient absorption etc. Chronic stress can also weaken the cow's immune system, making it more susceptible to diseases and infections. As a result, the animal may require increased use of antibiotics and other medications to treat illnesses, which may lead to the growth of antibiotic-resistant bacteria.

In addition to weight loss, stress can also affect the reproductive health of cows. It can result in reduced fertility rates, delayed onset of puberty and abnormal estrous cycles. This can indeed be a significant problem for dairy farmers, as it can decrease milk production and raise the expenses linked with breeding and raising replacement animals.

Stress can also result in behavioral changes that can have an impact on the physical health of cows. For instance, cows under stress may exhibit stereotypic behaviors, such as pacing, head bobbing and tongue rolling etc. These behaviors can physically harm the animal, such as hoof and mouth injuries and can also decrease feed efficiency and milk production.

Mental Effects:

Stress and anxiety can also have substantial impacts on the mental health of cows. Cows are social animals that form close bonds with their herd mates. When they are isolated or separated from their herd, they can become anxious and distressed. This can lead to increased vocalizations, agitation and aggression towards other animals or humans.

Apart from social isolation, other factors that can contribute to cow stress and anxiety include transportation, handling and changes in their environment. Cows are sensitive to environmental changes and can become stressed when exposed to new sights, sounds, and smells. They may also be stressed by handling and restraint, such as during veterinary procedures or when being moved between pens or farms.

As Chronic stress and anxiety can also lead to the development of mental health disorders in cows, such as

depression and anxiety, these conditions can have significant impacts on the animal's quality of life, leading to decreased interest in their surroundings, reduced appetite and decreased social interactions etc. It has been observed that in severe cases, certain affected cows may even exhibit self-destructive behaviors, such as excessive licking or biting.

In conclusion, stress and anxiety can have substantial impacts on the physical and mental health of cows. These effects can be expensive for farmers, in terms of decreased milk production and increased healthcare costs. Furthermore, this raises serious ethical concerns, as the welfare of these animals is jeopardized. It is essential for farmers and others involved in the care of cows to take measures to minimize the stress and anxiety these animals encounter, such as providing comfortable living conditions, reducing transport and handling and providing appropriate socialization. By doing so, the health and well-being of these animals can be drastically improved, which may lead to increased productivity and profitability for farmers.

UPI

BHIM UPI Payments Accepted at
BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

Account Number : 04072010006910, IFSC Code: PUNB0040710

Scan and Pay using any UPI supported Apps

गोसम्पदा पत्रिका के
सदस्य बनने के लिए
सदस्यता राशि UPI द्वारा
भुगतान कर सकते हैं

गाय एवं नमक

गाय महिमा–महत्ता दर्शाते सारगर्भित, भाव–प्रधान, लयबद्ध बिना मींडी की मात्राओं वाले (........) के 160 विषयों के प्रति विषय 25 दोहे योग 4000 दोहों में से इस पत्रे पर 'गाय एवं नमक' विषय के 4 दोहे अंकित हैं। ये दोहे आचार्य पिंगल द्वारा वर्णित दग्धाक्षरों (झ, ह, र, भ, ष) से प्रारंभ नहीं हैं। दोहों में मींडी की मात्राएँ न होने से अक्षरों का आकार 34% से अधिक बढ़ा हो गया है। अतः पढ़ने में स्पष्ट हैं। दोहों के लेखन में संगीत के नियमों का भी शत–प्रतिशत ध्यान रखा है ताकि गेयता बनी रहे।

नवल डागा, डी–314, हरी मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर–17 मो: 9460142420

पंचगव्य गर चाहते,
गाय पले घर–द्वार।
चारा खाने दें हरा,
संग नमक उपचार।।

गायें पालें हम सभी,
नमक करें उपचार।
गाय रुग्ण होए नहीं,
स्वस्थ रहे हर वार।।

प्यास जभी लगती नहीं,
रहती गाय उदास।
नमक चटाएं जब उसे,
चरने लगती घास।।

नमक खिलाएँ गाय को,
इसमें पोषक तत्व।
पाचन–तंत्र स्वस्थ बने,
मानव का दायित्व।।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 जुलाई, 2024

विहिप-गोरक्षा विभाग का क्षेत्रीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग संपन्न

लखीमपुर। विश्व हिंदू परिषद गोरक्षा विभाग का क्षेत्रीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग गत 30 मई से 1 जून तक पंडित दीनदयाल विद्या मंदिर इंटर कॉलेज लखीमपुर में संपन्न हुआ है, जिसमें कानपुर प्रांत और अवध प्रान्त का संयुक्त कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग हुआ। यह जानकारी विश्व हिंदू परिषद अवध प्रांत के प्रांत गो रक्षा प्रमुख राजेश सिंह एडवोकेट ने दी।

वर्ग का प्रथम सत्र का उद्घाटन विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के क्षेत्र संगठन मंत्री पूर्णेदु सिंह जी के द्वारा किया गया। उन्होंने गोरक्षा विभाग का इतिहास और गाय के महत्व के बारे में अपने विचार रखे और कार्यक्रम का समापन शैलेंद्र सिंह जी, राष्ट्रीय गो विज्ञान परीक्षा प्रमुख व पालक लखनऊ क्षेत्र के द्वारा किया गया। उक्त सत्र में **गोविज्ञान परीक्षा** के संबंध में और **"गोसम्पदा"** पत्रिका के प्रचार–प्रसार के संदर्भ में जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री व अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख दिनेश उपाध्याय जी उपस्थित रहे। उपाध्याय जी ने भारतीय संस्कृति (गौ संस्कृति) के रक्षण के संबंध में प्रकाश डाला। वर्ग के अगले सत्र में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गोरक्षा विभाग अवधेश जी गुप्त ने आर्थिक सुचिता पर अपने विचार रखे और गोरक्षा विभाग के संरक्षक वासुदेव पटेल जी ने **गौकृपा अमृतम** बनाने की विधि की जानकारी दी।

सह क्षेत्रगोरक्षा प्रमुख पूरन सिंह जी ने संगठन की रूप रेखा रखी तथा तथा चंद्रभान जी ने दायित्व बोध के बारे में बताया, क्षेत्र महिला गो भक्त प्रमुख संगीता सचान जी ने संगठन में महिलाओं को भूमिका के बारे में जानकारी दी और अंत में अवध प्रांत के प्रांत गोरक्षा प्रमुख ने वार्षिक कार्य योजना के सम्बंध में जानकारी दी। वर्ग समाप्त होने के बाद केन्द्रीय टोली की बैठक संपन्न हुई।

प्रशिक्षण वर्ग में विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री बृजेश पांडे, जितेंद्र पांडे, प्रांत मंत्री अमरेश बहादुर सिंह, सह मंत्री संत कुमार मिश्र, केशव शुक्ल, प्रांत कोषाध्यक्ष बच्चा बाजपेई, प्रांत उपाध्यक्ष बंदना गूमर, माया देवी सहित दोनों प्रांतों के सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक